Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 8 | AUGUST 2024

प्रेमचन्दोत्तर युगीन उपन्यास साहित्य और यथार्थवाद

डॉ. राजेन्द्र कुमार [1]

[1] **सहायक आचार्य हिंदी (अतिथि VSY), राजकीय महाविद्यालय पीसांगन (अजमेर).**

ABSTRACT:

उपन्यास का यथार्थ के साथ अत्यंत घनिष्ठ एवं अंतरंग सबंध है। उपन्यास का स्वरुप लोकभाषा, जनसामान्य के बोलचाल की भाषा के करीब होता है। यथार्थवाद वर्ग चरित्र युक्त प्रतिनिधी पात्रो का सृजन करता है। वह युगीन समाज की समस्याओं के अनुरुप ही घटनाओं व वातावरण का निर्माण कर उनका कलात्मक पुन सृजन करता है। यथार्थवाद उपन्यास साहित्य में एक काल विशेष के सामाजिक जीवन की संस्कृति के दर्शन स्पष्ट रूप से होते है साथ ही उस युग विशेष की राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक परिवेश तथा सम्पूर्ण इतिहास करी झांकी प्रस्तुत की जाती है।

KEYWORDS:

जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, भगवती चरण वर्मा, रागेंय राघव, अमृतलाल नागर, द्विवेदी।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
5th August 2024	6th August 2024

विषय प्रवेश:-

प्रेमचन्दोत्तर युग में उपन्यास सामाजिक यथार्थ के धरातल पर उतने समर्थ नहीं थे। प्रेमचन्द्र की सामाजिक दृष्टि के फलस्वरूप इन्होंने एक ओर तो सामाजिक जीवन के यथार्थ संबंधों, समस्याओं, अंसगतियो व विषमताओं को उद्घाटित किया वही दूसरी ओर उन्होने मनः सत्यों को भी प्रदान की। प्रेमचंद पवर्ती कथाकारों ने समाज को केन्द्र में रखने की बजाय व्यक्ति को प्रमुखता देते हुऐ उपन्यास रचना को एक नई ऊंचाई पर ले जाने का प्रयास किया है। प्रेमचन्दोत्तर सामाजिक उपन्यासों में एक नयी बात यह भी पाई गयी कि समस्त उपन्यासों में अपेक्षाकृत मनोविज्ञान का एक गहरा स्तर उभरता दिखाई देता है।

जैनेन्द्र ने कथा साहित्य को एक नयी दृष्टि प्रदान की। जैनेन्द्र की दृष्टि सदैव समाज की तुलना में व्यक्ति केन्द्रित रही और उनकी कृतियों में जिस यथार्थ का उद्घाटन हुआ वह भी एक विशेष नजरिये से देखा गया व्यक्ति का यथार्थ ही है। जैनेन्द्र साहित्य में कामना, लिप्सा, भय अथवा बन्धनों से मुक्त सत्य का आग्रह करते हैं, साहित्य में लिहाज न होगा, न भय ही, न प्रत्याशा। इसके अलावा एक और जैनेन्द्र साहित्य में सत्य, सुन्दर और शिव की कामना करते है जो समाज के लिए स्वीकार्य भी है ठीक दूसरी ओर जैनेन्द्र सामाजिक समस्याओं को असामाजिक एवं अव्यवहारिक दृष्टि से देखने के लिए भी प्रसिद्ध है। ' परख' (1929) और ' सुनीता' (1936) उपन्यास इसके उदाहरण है। जैनेन्द्र ने अपने उपन्यास संबंधी सिद्धातों में पात्रों व चरित्रों के विषय में अधिक सर्मथन किया है। जैनेन्द्र का प्रथम उपन्यास 'पररख' हिन्दी साहित्य में लिखित पहला, मनोवैज्ञानिक उपन्यास भी है। इसमें सत्यधन बिहारी और कट्टो के माध्यम से मानसिक द्वन्द्व का मनो-विश्लेषण किया गया है। सत्यधन आदर्शवादी होने का ढोंग मात्र करता है वह समाज की कुरीतियों को दूर करने का दिखावा करता है, पर जब यथार्थ रूप में एक विधवा का हाथ थाम कर उससे विवाह करने को कहा जाता है तब वह पीछे हट जाता है। 'सुनीता' उपन्यास में जैनेन्द्र ने सामाजिक यथार्थ की चिन्ता किये बगैर सुनीता, श्रीकांत, हरिहर पात्रों के माध्यम से कथा को पात्रो के बाहरी वातावरण में स्थान न देकर पात्रो के मानसिक विचारों में कथा को अधिक विस्तार दिया है। जैनेन्द्र का 'त्यागपत्र' (1337) उपन्यास अपनी सांकेतिकता, संवेदनशीलता, एकांगिता और जीवंत यातना के कारण बहुत ही प्रभावशाली है। इस उपन्यास के पात्र एक विशेष प्रकार की व्यक्तिवादी भूख और लेखक के गूढ़ आरोपित दर्शन से परिचालित होते है। ' जयवर्धन ' (1956) जैनेन्द्र द्वारा डायरी शैली में लिखे गये इस उपन्यास में भारत की इक्कीसवी सदी के राजनीतिक स्थिती का यथार्थ प्रस्तुत किया गया है। 'जयवर्धन' में उस समय की राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक दशा का चित्रण है।

इलाचन्द्र जोशी का नाम भी मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों में अग्रगण्य है। 'संन्यासी' का नायक नंदकिशोर अत्यंत अहंकारी प्रवृत्ति का है। इस अहंकार की तुष्टि के लिए वह कई स्त्रियों के जीवन को नष्ट करता है। वह जयन्ती के साथ भी इसीलिए विवाह करता है कि वह शान्त, सचरित्र व तेजस्विनी नारी के गर्व को चूर-चूर कर सकने में समर्थ हो सकेगा, अंत में भले ही वह अपने को सामाजिक अर्थ से जोड़ सन्यासी बन जाता है और नेता होकर जेल चला जाता है लेकिन वास्तव में वह अपने जीवन काल में कुण्ठित ग्रन्थियों से ग्रसित प्रतीत होता है।

अज्ञेय मूलतः मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार है, किन्तु इनके पात्र व जीवन की अनुभूतिया जीवन से ही लिये गये है। उन्होंने अपने पात्रो का यथार्थ विश्लेषण मनोविज्ञान के माध्यम से किया है। उनके उपन्यास 'शेखर एक जीवनी'(1941) 'अपने-अपने अजनबी' (1961), ' नदी के द्वीप ' (1951) विस्तृत वैविध्यपूर्ण जीवनानुभव को यथार्थवादी ढंग से अभिव्यक्त करते है उनकी रचनाओं में उनके जीवन के विभिन्न कालों की संवेदना अभिव्यक्त हुई है।

भगवती चरण वर्मा के 'चित्रलेखा' (1934), तीन वर्ष (1936), टेढ़े मेढ़े रास्ते (1948), आखिरी दांव (1950), साथ सामर्थ्य और सीमा (1962) रेखा (1964) उपन्यास आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और नैतिक समस्याओं पर आधारित है। भूले बिसरे चित्र (1959) एक सामाजिक उपन्यास है। जिसमे एक मध्यम वर्गीय कायस्थ परिवार के माध्यम से लेखक ने पीढी दर पीढ़ी परिवर्तित होते हुए सामाजिक परिवेश तथा नये उभरते हुए जीवन मूल्यों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। इसमें संयुक्त परिवार की टूटन तथा संबन्धों के बनते बिगड़ते कारणों और परिस्थितियों का यथार्थ अंकन हुआ है। ' सबहि नचावत राम गोसाई ' (1970) एक यथार्थवादी कृति है जिसमें स्वाधीनता के कुछ वर्षों से लेकर आज तक के भारत के यथार्थ जीवन की तथा धनपतियों नेताओं और गुड़ों की मिली-जुली शक्तियों से आक्रान्त और बरबाद होते भारत की तस्वीर खीचने का प्रयास किया गया है।

रांगेय राघव प्रगतिशील लेखक है। उन्होने अपने ऐतिहासिक उपन्यास की रचना से वहाँ की संस्कृति में रुढिवाद से संघष करती प्रगतिशील चेतना को व्यक्त किया है। उनके उपन्यास घरौंदा (1946) विषादमठ (1946), मुर्दो का टीला (1948), बोलते खण्डहर (1955) आखिरी आवाज (1962) जीवन इतिहास की गाथा कहते है। "मुर्त का टीला " उपन्यास मोहन जोदड़ो की संस्कृति और सभ्यता लिखा गया ऐतिहासिक उपन्यास है। वहां की संस्कृति में दास-दासियों के साथ किस प्रकार पशुवत व्यवहार किया जाता था, उसका यथार्थ चित्रण अंकित है। लेखक ने चरित्रों के निर्माण में तत्कालीन सामाजिक पृष्ठभूमि को ध्यान में

रखते हुए आधुनिक मनोविज्ञान का सम्यक उपयोग किया है।

अमृत लाल नागर के अधिकतर लखनऊ के शहर व गलियो का जिक हुआ। ऐसा प्रतीत होता है। कि मानो लखनऊ उनके उपन्यासों में जीवन्त हो उठा है, इसका प्रमाण उनका उपन्यास 'बूंद और समुद्र ' (1956) इसका प्रमाण है। " इनके अन्य उपन्यास 'अमृत और विष ' (1966) " नाच्यौ बहुत गोपाल " (1978) अग्निगर्भा (1983) आदि उपन्यासों में मध्यम वर्गीय व्यक्ति केंद्र में है। इनके उपन्यासों में जीवन यथार्थ का गहरा व सशक्त चित्र अंकित है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासो की पृष्ठभूमि मुख्य रूप से ऐतिहासिक है। उनके उपन्यासों में राजनैतिक यथार्थ की अभिव्यक्ति बाणभट्ट की आत्मकथा (1946), चारुचंद्र लेख (1963), पुनर्नवा (1973), अनामदास का पोथा (1976) उपन्यासो में हुई है, जिसमें राष्ट्रहित की चेतना मुखरित है। ' बाणभट की आत्मकथा ' उपन्यास द्विवेदी जी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है जो आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है।इसमें हर्षकालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक का यथार्थ चित्रण हुआ है। नायिका निउनिया के माध्यम से प्रेम का उदात्तीकरण दिखाया गया है। चारु चंद्र लेख में राजा सातवाहन तथा चन्द्रलेखा की कथा वर्णित है। ' पुनर्नवा ' उपन्यास में वर्ण व्यवस्था एवं नारी के शोषण का चित्रण है। "अनामेदास का पोथा" में औपनिषदिक युग के परिवेश एवं जीवन पद्धति का यथार्थ चित्रण वर्णित है। सामाजिक दृष्टि से इनके उपन्यासों में नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय है। उस समय नारी अपमानित व उपेक्षित थी। जातिगत् संर्कीणता, तथा धर्माडम्बर व संस्कृति विहिन समाज का यथार्थ चित्रण उनके उपन्यासों की विशेषता है।

सारांश:-

प्रेमचन्द के परवर्ती उपन्यासकारों में राहुल सांकृत्यायन, मन्मथ लाल गुप्त आदि प्रमुख लेखक है। प्रेमचन्द की आदर्शात्मक यथार्थवादी, परम्परा को यथार्थ के घरातल पर उतारने का कार्य उन सभी उपन्यासकारों ने किया है। इस युग में सामाजिक चेतना की अनुभूति के दर्शन ऐतिहासिक उपन्यासों में भी देखे जा सकते हैं। 'दिव्या', 'मुर्दो का टीला', 'सिने सेनापति', आदि उपन्यास आपने समय की समस्याओं का चित्रण करते है, इन उपन्यासों में एक शक्ति व ऊर्जा है। प्रेमचंद ने जिस आदर्श यथार्थ के बीज अपने साहित्य में बोये थे। इस युग के कथाकारों ने उसे सिचित करने का सफल प्रयाप्त अवश्य किया है।

REFERENCES

1. रामदरश मिश्र : हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा

2. नरेन्द्र कोहली : हिन्दी उपन्यास सृजन और सिद्धांत

3. अमृतलाल नागर : बूंद और समुद्र 4. एन. मोहन : समकालीन हिन्दी उपन्यास

4. मधु मीणा : अमरकांत के उपन्यास साहित्य में चित्रित यथार्थवाद : एक अनुशीलन

5. मधु मीणा : अमरकांत के उपन्यास साहित्य में चित्रित यथार्थवाद : एक अनुशीलन